दिखाई देते ही टेबुकोनाजोल / हेक्साकोनाजोल / प्रोपीकोनाजोल कवकनाशी 1 मि0 ली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।

बीजोपचारः बुआई से 24 घंटे पूर्व कार्बेण्डाजीम 50 प्रतिशत डब्लू0 पी0 2 ग्राम फफूंदनाशी प्रति किग्रा0 बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। पुनः कीट से बचाव हेतु क्लोरोपाइरीफॉस, 20 प्रतिशत ई0 सी0 दवा से 3 मी0 ली0 प्रति किलो बीज की दर से उपचार करना चाहिए। राइजोबियम कल्चर के उचित घोल बनाकर उपचार करना चाहिए। इसके लिए एक एकड़ के बीज हेतु सर्वप्रथम 250 ग्राम गुड़ या शक्कर लेकर पानी में घोल बना लें तदुपरांत उसे गर्म कर खौलावें। जब गाढ़ा चासनी की तरह बन जाए तो उसे ठंडा होने के लिए छोड़ दें फिर उसमें 100 मी0ली0 राइजोबियम कल्चर डालकर घोल बना लें। पुनः फफूंदनाशी एवं कीटनाशी से उपचारित बीज को तीन इंच मोटा पक कर फ्लोर या प्लास्टिक पर फैला दें तथा उसके ऊपर राईजोबियम कल्चर का घोल डालकर मिला दें। इस प्रकार सारा बीज लसलसा हो जाएगा। उस परिस्थिति में थोड़ा सुखा या भूरभूरी गोबर खाद देकर मिला लें। याद रहे उपचारित बीज को ज्यादा समय तक खेत में छिड़क कर न रखें उसे यथा शीघ्र जुताई कर दें।

उर्वरक प्रबंधनः 20 कि0 ग्रा0 नेत्रजन, 40–60 कि0ग्रा0 स्फूर (100 किग्रा0 डी0ए0पी)/हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिए। उर्वरकों की पूरी मात्रा बुआई के पूर्व अंतिम जुताई के समय एक समान रूप से खेत में मिला देना चाहिए।

निकाई–गुड़ाई एवं खरपतवार प्रबंधनः प्रथम निकाई गुड़ाई बुआई के 25–30 दिनों बाद एवं दूसरी 45–50 दिनों बाद करना चाहिए। रासायनिक विधि से खरपतवार प्रबंधन हेतु पेंडीमेथिलीन 30 प्रतिशत ई0सी0 प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के तुरंत बाद या 48 घंटे के अन्दर कर देना चाहिए।

सिंचाई प्रबंधनः साधारणतया दलहनी फसलों को कम जल की आवश्यकता होती है। नमी की कमी की स्थिति में पहली सिंचाई 45–50 दिनों के बाद तथा दूसरी सिंचाई फली बनने की अवस्था में करनी चाहिए।

कटाई, दौनी एवं भंडारणः फसल तैयार होने पर फलियॉ पिली पड़ जाती है तथा पौधा सुख जाता है। पौधों को काटकर धूप में सुखा लें एवं दौनी कर दाना अलग कर धूप में सुखाकर ही भंडारित करना चाहिए।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
कृषि विज्ञान केन्द्र, भगवानपुर हाट सिवान
(डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रिय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर)
मार्गदर्शक– डॉ0 मधुसुदन कुण्डु, निदेशक प्रसार शिक्षा

Printed By - ***New Print Zone***, Samastipur # 9771222492

प्र.शि.नि./प्रकाशन/378/2022–23

बदलते मौसम के परिवेश में मसूर की खेती

लेखकगण

डॉ. हर्षा बी. आर., डॉ अनुराधा रंजन कुमारी, डॉ. नंदिशा सी.बी. शिवम् चौबे एवं प्रशांत कुमार

कृषि विज्ञान केन्द्र
भगवानपुर हाट, सिवान
डा. राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर – 848125 (बिहार)

बिहार राज्य की कृषि में दलहनी फसलों का बहुत महत्व है। दाले शाकाहारी भोजन में प्रोटीन का मुख्य व सरल स्रोत तो है ही अपितु टिकाऊ खेती में भी दलहनी फसलों का विशेष योगदान है। प्रति व्यक्ति दलहन की उपलब्धता दिन प्रतिदिन घटती जा रहीं है। इसका मुख्य कारण उन्नत प्रजातियों के प्रमाणित बीजों की उचित मात्रा में अनुपलब्धता, रोग–कीटों का प्रयोग अजिवीय कारकों के प्रति संवेदनशीलता, बरानी क्षेत्र में बिना लागत के खेती करना एवं विपणन की उचित तकनीक उपलब्धता है जो कि दलहन उत्पादन की ऐसी उन्नत तकनीक उपलब्ध है जो कि उत्पादन को दोगुना तक बढ़ाने में सक्षम है। इन तकनीकियों को समूचित माध्यम द्वारा कृषकों तक पहुॅचाने की आवश्यकता है। मसूर रबी मौसम की एक प्रमुख दलहनी फसल है। प्रायः सिंचित क्षेत्रों में धान की फसल के बाद मूसर की फसल लगाई जाती है। बिहार राज्य में उतेरा विधि से धान की खड़ी फसल में बीज छिड़क कर भी बोया जाता है। मसूर की खेती सभी प्रकार के मिट्टी में की जा सकती है। मसूर के अधिक उत्पादन के लिए उन्नतशील उत्पादन तकनीक का उपयोग आवश्यक है।

उन्नत प्रभेदः

प्रभेद	बुआई का समय	पकने की अवधि (दिनों में)	औसत उपज (क्वि0/हे0)	अभियुक्ति
पी0 एल0 – 406	25 अक्टूबर से 25 नवम्बर	130–140	15–20	पूरे बिहार के लिए
आई0पी0एल0–406	15 अक्टूबर से 15 नवम्बर	120–130	15–18	बड़ा दाना उपयुक्त
मल्लिका के0–75	15 अक्टूबर से 15 नवम्बर	130–135	20–22	उकठा एव जड़ गलन रोगों के प्रति सहिष्णु
अरूण पी0 एल0 (77–22)	15 अक्टूबर से 15 नवम्बर	110–120	22–25	दाना मध्यम आकार का/ पूरे बिहार के लिए उपयुक्त दाना मध्यम आकार
आई0 पी0 एल0 – 220	25 अक्टूबर से 15 नवम्बर	120–125	14–18	हरदा एवं उकठा प्रतिरोध
पी0 एल0–639	25 अक्टूबर से 15 नवम्बर	120–125	10–20	पूरे बिहार के लिए उपयुक्त
एच0 यू0 एल0 –57	25 अक्टूबर से 15 नवम्बर	135–130	20–25	उकठा सहिष्णु
के0 एल0 एस0 – 218	25 अक्टूबर से 15 नवम्बर	120–125	20–25	हरदा एवं उकठा सहिष्णु
नरेन्द्र मसूर–1	25 अक्टूबर से 15 नवम्बर	120–125	20–25	हरदा एवं उकठा सहिष्णु
शिवालिक एल0–4076	25 अक्टूबर से 15 नवम्बर	120–125	20–25	हरदा एवं झुलसा सहिष्णु

बीज दरः छोटे दाने के प्रजाति के लिए 30–35 किग्रा0 तथा बड़े दाने के लिए 40–45 किग्रा0/हे0 तथा पैरा फसल के रूप में बुआई हेतु 50–60 किग्रा0/हे0 है।

मसूर में उकठा बीमारीः प्रारंभिक अवस्था में पत्तियॉ हल्के पीलापन के बाद मुरझा जाती है और पौधे सुख जाते है बाद की अवस्था में पौधे की वृद्धि रूक जाती है और हल्के पीलापन के बाद पत्तियॉ सिकुड़ जाती है तथा अंततः पौधा सूख जाता है। खेत में इन बीमारी का प्रकोप जगह–लगह दिखाई पड़ता है।

उपायः–

- 3–4 वर्ष का फसल चक्र अपनावें।
- ट्राइकोडरमा 5 ग्राम, कार्बाक्सीन 2 ग्राम प्रति किग्रा0 बीज की दर से बीज उपचार करें।
- जिंक सल्फेट 20–25 किग्रा0 प्रति हे0 मिट्टी की आवश्यकतानुसार करने पर उकठा के प्रकोप में कमी आती है।
- मसूर के साथ तीसी की मिश्रित खेती करें।

स्तम्भ मुल संधि तालन (कालर रॉट): पौधे की आरंम्भिक अवस्था में पत्तियॉ धीरे–धीरे पीली होकर मुरझा जाती है। कॉलर क्षेत्र के तने में सफेद रंग की फफूंद जाल दिखाई पड़ता है। आयु के साथ पौधे की इस बीमारी के प्रति संवेदनशीलता कम होती जाती है। नाईट्रोजन की अधिकता से बीमारी बढ़ता है तथा पोटाश और फॉस्फोरस के प्रयोग से घटता है।

उपायः अनुशंसित बीमारी रोधी प्रभेद जैसे आई0 पी0 एल0–406, एच0 यू0 एल0 –57, के0 एल0 एस0 –218, पूसा वैभव आदि का चयन करें। बीमारी के लक्षण